



## Dhumil ka Krutitva: Darpan Ke Aar - Par

धूमिल का कृतित्व : दर्पण के आर-पार

\* Dr. Parvati Gosai

\* Govt. Arts & Commerce College, Padaddhari, Rajkot

मैं ठंठ दिग्नाम संज्ञा लूँ, जिसकी परिभाषा अर्थात् तक नहीं हुई। मुझे दुहरा दो दर्पण के आर-पार, अनायासित बिम्बों में मुझे दुहरा दो।

अपने-आपको ठंठ दिग्नाम संज्ञा माननेवाले, सुदामाप्रसाद पाइरेय 'धूमिल' वास्तव में ठंसी संज्ञा हैं, जिसकी परिभाषा करना, उससे दर्पण के आर-पार अनायासित बिम्बों में दुहराना अपने-आपमें ठंठ उपलब्धि है।

जब राष्ट्रीय क्षितिज पर येतना का नया आलोक कूट रहा था, तभी नई रंगों और आकर्षणों को लेकर ठंठ किरण कूटी, जिसका नाम था 'धूमिल'। ठंसी किरण ने अपनी वैचारिक आत्मा से छिन्दी काव्याकाश को जगमगा दिया। ठंसी कृतित्व की किरणें आज भी पाठकों को ठंठ नई आत्मा प्रदान करती हैं।

'धूमिल' साठोत्तरी काल के कवियों में वह नाम है, जिसने थोड़ी-सी रचनाएँ देकर बहुत बड़ी भ्याति को पीछे छोड़ा है। ४० से भी कम आयु भुगतने वाले ठंसी कवि ने जीवन की ठंसी सख्खाई यों का अनुभव प्राप्त किया, जिसका जयादातर लोग जिन्दगी की ढलान पर आकर करते हैं। सीमित अवधि में भाव-जगत् में ठंसीने जैसा भी किया, उसका ठंमानदारीपूर्वक अंकन अपने कृतित्व में किया। अपनी खुली अभिव्यक्ति और खुले वक्तव्यों के कारण सुदामा जी को निंदा का भागी भी बनना पड़ा था, लेकिन बेलाग और बेभौक कलना ठंसीकी किरण थी, जिसका ठंसीने आजीवन अमल किया। अपने ठंसी मस्तमौलेपन के कारण छिन्दी साहित्य जगत् के लोगों ने ठंसी कम महत्त्व देने की कोशिश की थी, फिर भी ठंसी प्रकाश की वादात्मक बंदीशों ने ठंसीके नई किया और ठंसीने कबीर का-सा सपाठभयानी का रूप अपनाकर अपने-आपको दुनिया के सामने ठंठ दिग्नाम संज्ञा के रूप में घोषित करके लोगों को युनौती दी कि यह है छिम्मत तो मुझे दर्पण के आर-पार अनायासित बिम्बों में दुहरा दो और ठंसी दुहराने के लिए, ठंसीकी परिभाषा करने के लिए हमारे पास सिर्फ और सिर्फ तीन काव्य-संग्रह हैं, जिसमें से हमें ठंसीको, ठंसीके व्यक्तित्व को पढ़ना है। ठंठ जगद ठंसीने विभाषा की है -

'अक्षरो के भीय गिरे हुए आदमी को पढो।'

सुदामाप्रसाद पाइरेय की अपनी जीवन्-याती के रूप में हमें तीन काव्य-संग्रह उपलब्ध हुए हैं। वेसे ठंसीने विभना तो सातवी कक्षा से ही तुकबंदियों के रूप में आरंभ कर दिया था। काव्य ठंसीकी आत्मा की चुराक था, जिसके न मिलने पर वह अपने-आपको भाषा समजते थे। ठंसीने गद्य भी लिखा, लेकिन प्रतिष्ठित काव्य से हुए। १९५३ के आसपास ठंसीकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थीं, लेकिन ठंसीकी सही पहचान छिन्दी काव्य-जगत् को ठंसीके पहले काव्य-संग्रह 'संसद से सडक तक' के प्रकाशन के बाद हुई। यही ठंठ मात्र संग्रह ठंसीके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। अन्य दो का प्रकाशन ठंसीके मरणोपरान्त हुआ, मगर जल्दी और महत्त्वपूर्ण यह है कि ठंसीके संग्रहों ने जीते जी और मरने के बाद भी पाठकों के दिलों-दिमाग में जलबली मचा दी, जिसका कारण ठंसी संग्रहों में छपी वास्तविकता का चित्रण था। 'धूमिल' के कृतित्व के कथ्य का वैविध्य यदि देखा जाय तो ठंसीमें ठंठ नहीं, देरों विशिष्टताएँ परिवर्धित होंगी, जिन्हें हम कथ्य-तीनों संग्रह के माध्यम से ठंसीकी विभिन्नता के साथ ठंसी तरल देख सकते हैं :

'संसद से सडक तक' काव्य विकास का प्रथम चरण :

'संसद से सडक तक' 'धूमिल' जी का प्रथम काव्य संग्रह है। ठंसीमें कुल पच्चीस कविताएँ हैं। प्रत्येक कविता में 'धूमिल' जी की अभिव्यक्ति वाजवाब है। ठंसीकी भी ठंठ काव्य को कम महत्त्वपूर्ण कलना पाठक की अल्पबुद्धि या सीमित सोच का फल होगा। 'जनतंत्र के सुर्योदय में', 'अकाल-दर्शन', 'कवि-१९७०', 'नक्सलवादी', 'पटकथा', 'शान्तिपाठ' आदि प्रत्येक कविता ठंठ से बढ़कर ठंठ है। कुल्लेक लम्बी कविताएँ हैं तो कुछ अत्यंत लघु, मगर वैचारिकता की दृष्टि से असीमित हैं। ठंसी सभमें ठंसी-न-ठंसी विशिष्ट घटना या प्रसंग की प्रस्तुति सही ठंठ सार्थक संदर्भ में की गई है, ठंसीलिथ ये शब्दकोशीय अर्थ-व्यंजना के साथ-साथ संदर्भ की व्यापकता को भी ग्रहण किए हुए हैं। ठंसीपरी घरातल पर भाषा में प्रयुक्त शब्द विनौने परिवेश ठंठ स्थितियों के प्रतीक हो सकते हैं, मगर ठंसीके द्वारा कवि विशिष्ट भाव संग्रेषित करना चाहते हैं। ठंसी कविताओं से 'धूमिल' जी ने जडाज्य लोगों के मस्तिष्क को जकजोरा, वही ठंसीकी भावगत संवेदनाओं ने कुंठित मनोवृत्ति को मूल्यहीनता, अराजकता और येतना की दृन्ध-स्थिति से जोडा। भीतली हुई पीढी की सडानुभूति के चित्रण में यथार्थ का संस्पर्श कडी-कडी हुआ है। व्यष्टि और समष्टि की अभिव्यक्ति के कारण जो त्रासदी भली हुई थी, उसको तनावरहित स्थितियों में आरोपित कर संवेदनाओं की वकता के अन्तर्विरोध का स्वर सुभरित किया। यही कारण है कि ठंसीकी ठंसी कृति में भौद्धिकता, वैचारिकता और यथार्थता का समावेश होता है।

प्रकारान्तर से हम कह सकते हैं कि 'संसद से सडक तक' ठंठ ठंसी अजायबघर है, जिसमें नेता, अभिनेता, मजदूर, मोरीराम, बनिया, वैज्ञानिक, शिक्षक, डाक्टर, साडुकार, सेठ आदि न जाने कौन-कौन कितनी ही संजीदगी के साथ कूट कर लिथे गए हैं। अपनी निजी मगर फिर भी समष्टिगत सोच से वे कविताओं के माध्यम से सीधे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करते हैं, यानि कि व्यक्तित्व के भीतर वैचारिक संक्रमण करते हैं। यही ठंसीके कृतित्व की ताकत है। यौन-प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से जडाज्य वे समाज के मजोर अंगों को शाक देते हैं, वही हमें अपनी वर्गीय येतना की स्पष्टतः पहचान भी करा देते हैं। अशोक वाजपेयी जी ने 'धूमिल' जी की ठंसी विशिष्टता की ओर ठंसीके करते हुए 'संसद से सडक तक' के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है - 'धूमिल ठंसीसे युवा कवि हैं, जो उत्तरदायी ढंग से अपनी भाषा और फार्म को संयोजित करते हैं। उत्तरदायी होने के साथ-साथ 'धूमिल' में गहरा आत्मविश्वास भी है, जो रचनात्मक ठंसीने जना और समज के युवे-मिले रहने से आता है और जिसके रहते वे रचनात्मक सामग्री का स्फूर्त, लेकिन सार्थक निर्यंत्रण कर पाते हैं।' कथ्य अथवा विषय प्रतिपादन की दृष्टि से 'संसद से सडक तक' काव्य-संग्रह में संकलित कविताओं में कथ्यः राजनीतिक, सामाजिक ठंठ आर्थिक विषमताओं के साथ वर्ग-येतना, नारी स्थान ठंठ नक्सलवादी आंदोलन की सांकेतिक अभिव्यक्ति हुई है। राजनीतिक समज, ठंसीसांकेतिक बोध ठंठ सामाजिक दायित्व-बोध के साथ वर्ग-येतना की सही पहचान - ठंसी सभकी की सपाठ ठंठ संश्लिष्ट अभिव्यक्ति ठंसीकी कविताओं में हुई है। प्रत्येक शब्द हमारे अन्तर को स्पर्श करता है, मस्तिष्क को जकजोरा है और सोचने के लिए मजबूर कर देता है। आदमी का सही रूप उद्घाटित करने के लिए कवि ने ठंसी स्थितियों का पर्दाकाश किया है, जिन्हें हम सभ परिचित हैं, जो जन्-मानस में व्याप्त भी है - 'ठंठ आदमी / रोटी बेलता है / ठंठ आदमी रोटी पाता है। ठंठ तीसरा आदमी भी है जो न रोटी बेलता है न रोटी पाता है / वह सिर्फ रोटी से भेलता है / मैं पूछता लूँ - यह तीसरा आदमी कौन है ? / मेरे देश की संसद मौन है।' 'संसद' में ठंसीका तात्पर्य राजनीति है और 'सडक' से आम आदमी। वे संसद तथा आम आदमी की यथार्थता से लवील्लाज्जति परिचित हैं, ठंसीलिथ वे कहते हैं - 'दर असल, अपने यडाज्य जनतंत्र / ठंठ ठंसी तमाशा है / जिसकी जान / मदारी की भाषा है।'